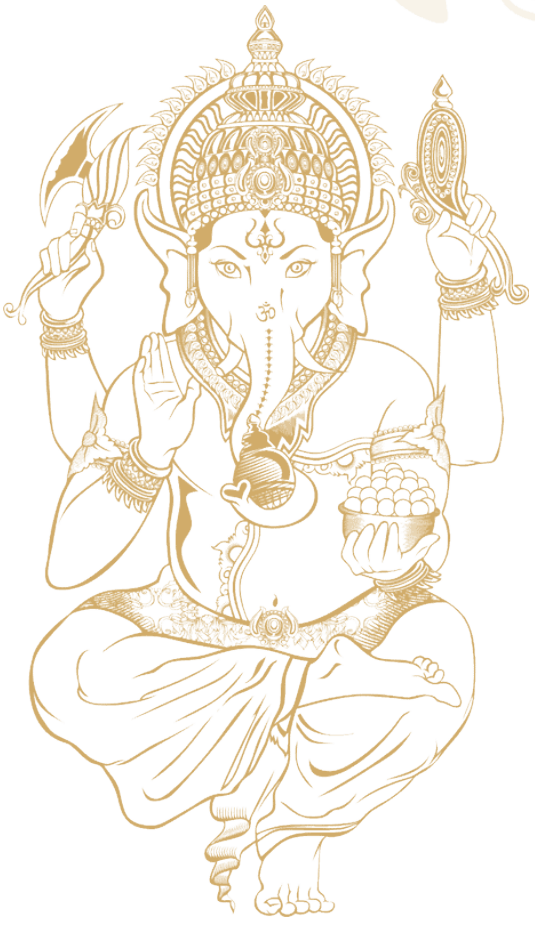

Mr.

20 Dec 2025

04:43 PM

Delhi

Model: Web-MyKundli

Order No: 120628601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**20/12/2025**
दिन	शनिवार
जन्म समय	**16:43:00 घंटे**
इष्ट	23:53:51 घटी
स्थान	**Delhi**
देश	India

अक्षांश	28:39:00 उत्तर
रेखांश	77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	16:21:52 घंटे
वेलान्तर	00:02:24 घंटे
साम्पातिक काल	22:19:02 घंटे
सूर्योदय	07:09:27 घंटे
सूर्यास्त	17:28:18 घंटे
दिनमान	10:18:51 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	हेमन्त
सूर्य के अंश	04:35:52 धनु
लग्न के अंश	24:53:49 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	वृष - शुक्र
राशि-स्वामी	**धनु - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**मूल - 3**
नक्षत्र स्वामी	केतु
योग	वृद्धि
करण	किंस्तुघ्न
गण	राक्षस
योनि	श्वान
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	भा-भारत
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	धनु

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	मार्गशीर्ष	29
पंजाबी	संवत : 2082	पौष	6
बंगाली	सन् : 1432	पौष	4
तमिल	संवत : 2082	मार्गड़ी	5
केरल	कोल्लम : 1201	धनु	5
नेपाली	संवत : 2082	पौष	5
चैत्रादि	संवत : 2082	पौष	कृष्ण 15
कार्तिकादि	संवत : 2082	मार्गशीर्ष	कृष्ण 15

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ___: 15
तिथि समाप्ति काल _____: 07:13:05
जन्म तिथि _____: 1
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ___: मूल
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 25:21:31 घंटे
जन्म योग _____: मूल
सूर्योदय कालीन योग ___: गण्ड
योग समाप्ति काल _____: 16:17:01 घंटे
जन्म योग _____: वृद्धि
सूर्योदय कालीन करण ___: नाग
करण समाप्ति काल _____: 07:13:05 घंटे
जन्म करण _____: किंस्तुघ्न
भयात _____: 44:39:40
भभोग _____: 66:15:58
भोग्य दशा काल _____: केतु 2 वर्ष 3 मा 14 दि

घात चक्र

मास _____: श्रावण
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: भरणी
योग _____: वज्र
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: धनु
सूर्य _____: तुला
चन्द्र _____: मीन
मंगल _____: वृश्चिक
बुध _____: सिंह
गुरु _____: धनु
शुक्र _____: कुम्भ
शनि _____: कन्या
राहु _____: कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

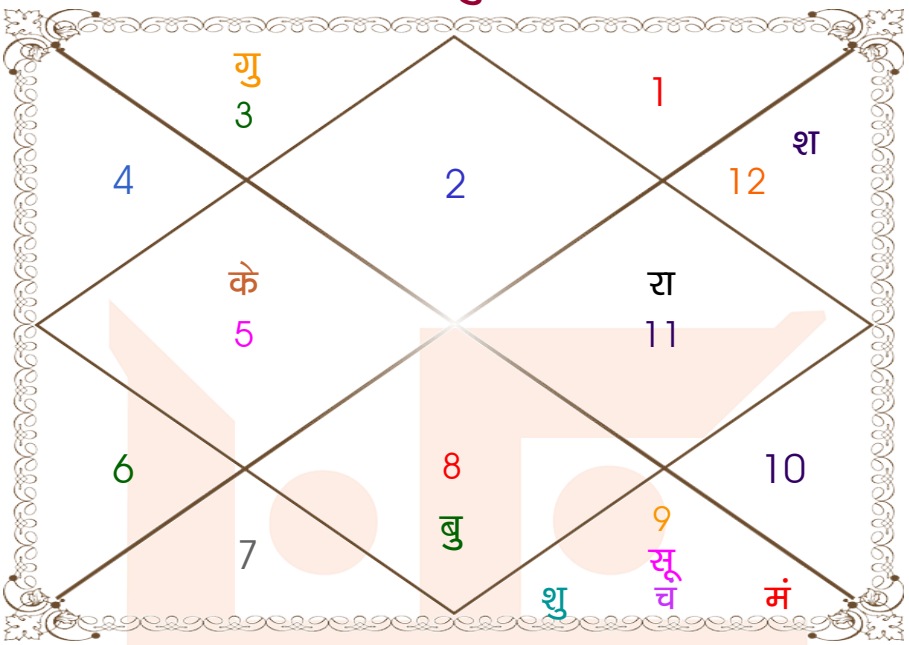

चन्द्र कुंडली

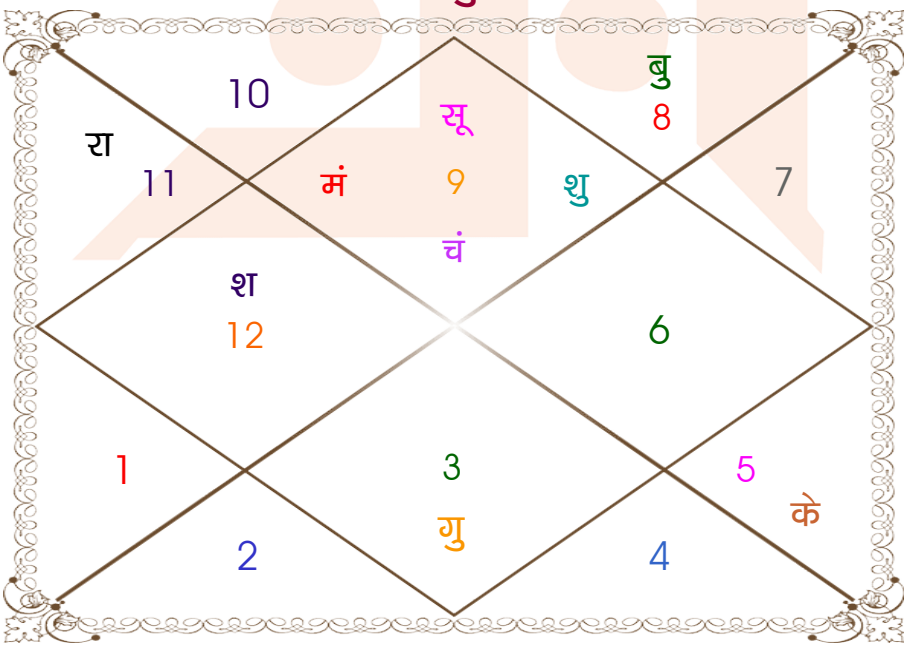

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

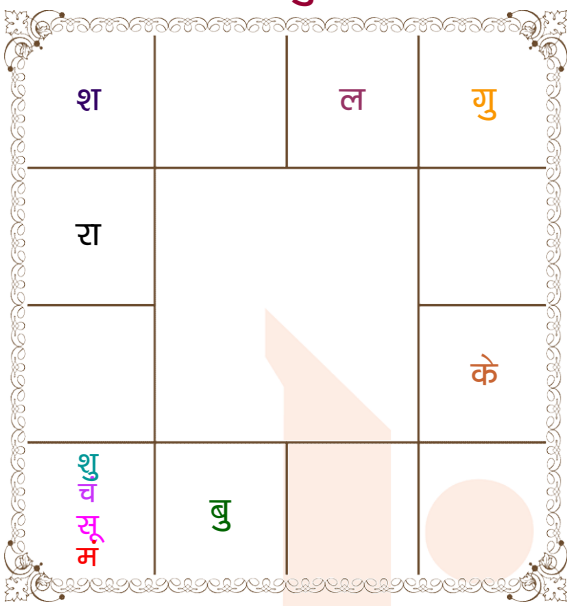

लग्न कुंडली

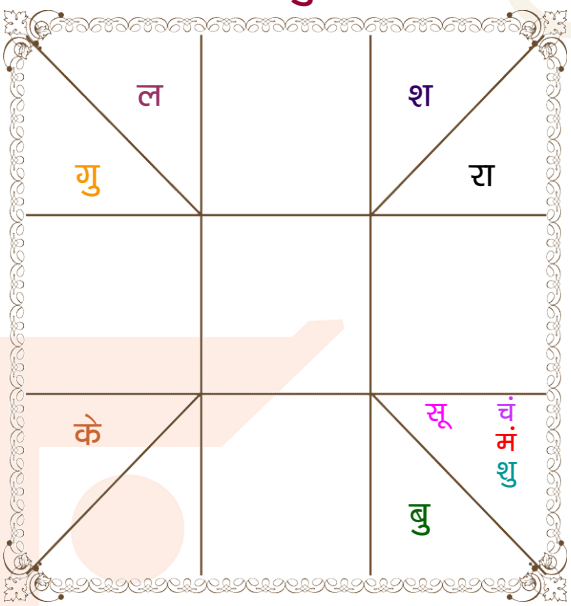

विंशोत्तरी

केतु 2वर्ष 3मा 14दि

केतु

20/12/2025

06/04/2141

केतु	04/04/2028
शुक्र	04/04/2048
सूर्य	05/04/2054
चन्द्र	04/04/2064
मंगल	05/04/2071
राहु	05/04/2089
गुरु	06/04/2105
शनि	05/04/2124
बुध	06/04/2141

योगिनी

उल्का 1वर्ष 11मा 16दि

उल्का

20/12/2025

07/12/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	20/12/2025
धान्या	07/06/2026
भ्रामरी	06/02/2027
भद्रिका	07/12/2027

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	24:53:49	350:34:44	मृगशिरा	1	5	शुक्र	मंगल	राहु	---
सूर्य			धनु	04:35:52	01:01:07	मूल	2	19	गुरु	केतु	चंद्र	मित्र राशि
चंद्र			धनु	08:58:20	12:05:31	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	सम राशि
मंगल		अ	धनु	09:40:29	00:45:29	मूल	3	19	गुरु	केतु	शनि	मित्र राशि
बुध			वृश्चि	17:17:47	01:26:01	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	सम राशि
गुरु	व		मिथु	28:33:28	00:06:50	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि
शुक्र		अ	धनु	00:28:13	01:15:32	मूल	1	19	गुरु	केतु	केतु	सम राशि
शनि			मीन	01:22:50	00:02:22	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	सम राशि
राहु	व		कुंभ	17:37:37	00:13:20	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	सूर्य	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	17:37:37	00:13:20	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	मंगल	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृष	04:05:10	00:02:04	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	शनि	---
नेप			मीन	05:10:49	00:00:21	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	---
प्लूटो			मक	08:09:48	00:01:40	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
दशम भाव			कुंभ	08:35:08	--	शतभिषा	--	24	शनि	राहु	राहु	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:16

लग्न-चलित

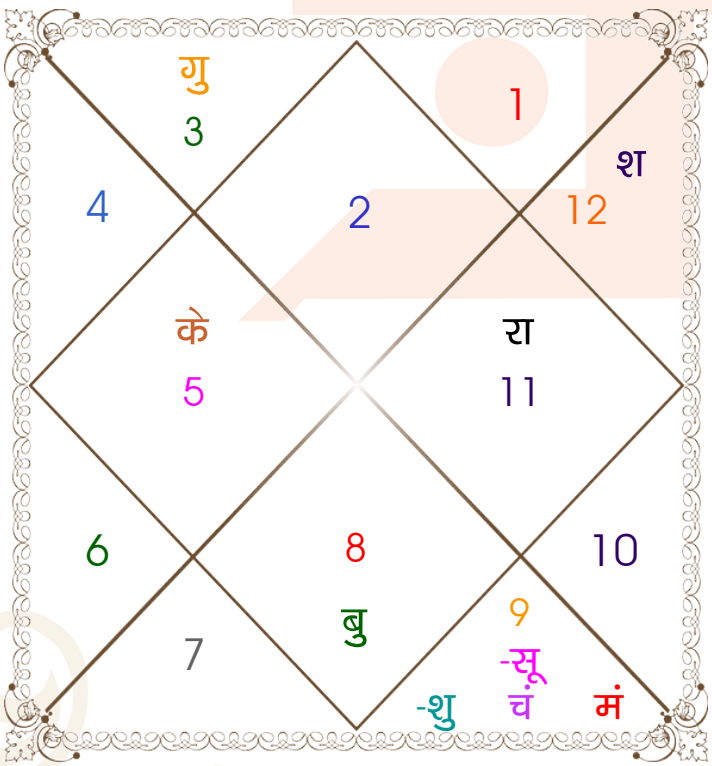

चन्द्र कुंडली

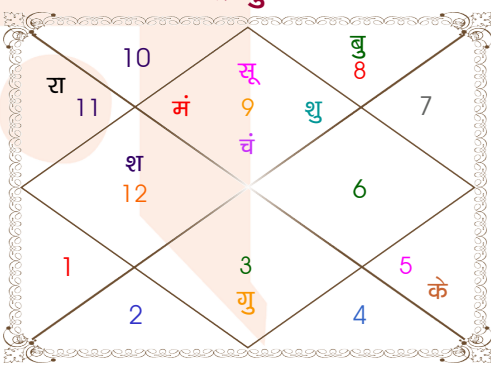

नवमांश कुंडली

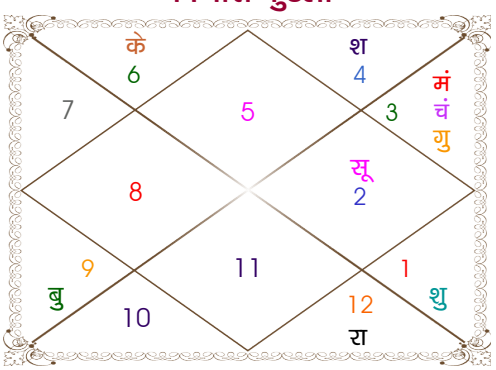

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	वृष	07:10:43	वृष	24:53:49
2	मिथुन	07:10:43	मिथुन	19:27:36
3	कर्क	01:44:29	कर्क	14:01:22
4	कर्क	26:18:15	सिंह	08:35:08
5	सिंह	26:18:15	कन्या	14:01:22
6	तुला	01:44:29	तुला	19:27:36
7	वृश्चिक	07:10:43	वृश्चिक	24:53:49
8	धनु	07:10:43	धनु	19:27:36
9	मकर	01:44:29	मकर	14:01:22
10	मकर	26:18:15	कुम्भ	08:35:08
11	कुम्भ	26:18:15	मीन	14:01:22
12	मेष	01:44:29	मेष	19:27:36

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	24:53:49
2	मिथुन	18:19:30
3	कर्क	11:44:07
4	सिंह	08:35:08
5	कन्या	11:24:36
6	तुला	18:54:49
7	वृश्चिक	24:53:49
8	धनु	18:19:30
9	मकर	11:44:07
10	कुम्भ	08:35:08
11	मीन	11:24:36
12	मेष	18:54:49

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

चलित कुंडली

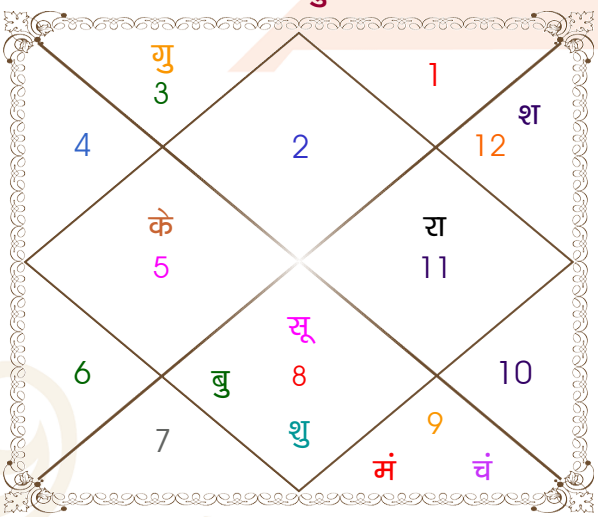

भाव कुंडली

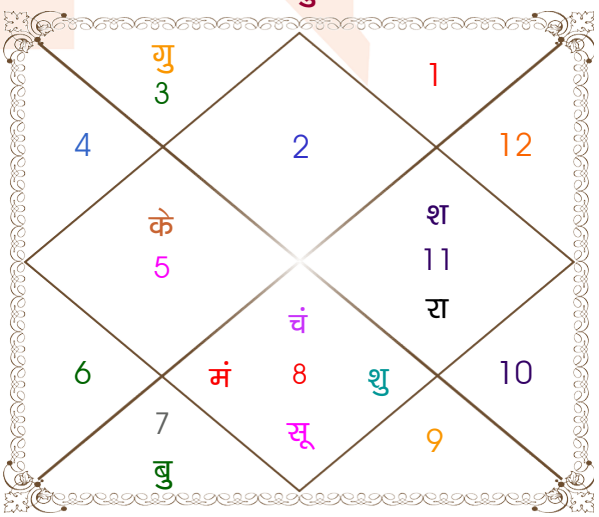

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 2 वर्ष 3 मास 14 दिन

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
20/12/2025		04/04/2028		04/04/2048		05/04/2054		04/04/2064	
04/04/2028		04/04/2048		05/04/2054		04/04/2064		05/04/2071	
	00/00/0000	शुक्र	05/08/2031	सूर्य	23/07/2048	चंद्र	03/02/2055	मंगल	01/09/2064
	00/00/0000	सूर्य	04/08/2032	चंद्र	22/01/2049	मंगल	04/09/2055	राहु	19/09/2065
	00/00/0000	चंद्र	05/04/2034	मंगल	30/05/2049	राहु	05/03/2057	गुरु	26/08/2066
	00/00/0000	मंगल	05/06/2035	राहु	23/04/2050	गुरु	05/07/2058	शनि	05/10/2067
	00/00/0000	राहु	05/06/2038	गुरु	09/02/2051	शनि	04/02/2060	बुध	01/10/2068
	20/12/2025	गुरु	03/02/2041	शनि	22/01/2052	बुध	05/07/2061	केतु	27/02/2069
गुरु	27/02/2026	शनि	04/04/2044	बुध	28/11/2052	केतु	03/02/2062	शुक्र	29/04/2070
शनि	08/04/2027	बुध	03/02/2047	केतु	05/04/2053	शुक्र	05/10/2063	सूर्य	04/09/2070
बुध	04/04/2028	केतु	04/04/2048	शुक्र	05/04/2054	सूर्य	04/04/2064	चंद्र	05/04/2071

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
05/04/2071		05/04/2089		06/04/2105		05/04/2124		06/04/2141	
05/04/2089		06/04/2105		05/04/2124		06/04/2141		00/00/0000	
राहु	16/12/2073	गुरु	24/05/2091	शनि	09/04/2108	बुध	02/09/2126	केतु	02/09/2141
गुरु	11/05/2076	शनि	04/12/2093	बुध	18/12/2110	केतु	30/08/2127	शुक्र	02/11/2142
शनि	18/03/2079	बुध	11/03/2096	केतु	26/01/2112	शुक्र	30/06/2130	सूर्य	10/03/2143
बुध	04/10/2081	केतु	15/02/2097	शुक्र	28/03/2115	सूर्य	07/05/2131	चंद्र	09/10/2143
केतु	23/10/2082	शुक्र	17/10/2099	सूर्य	09/03/2116	चंद्र	05/10/2132	मंगल	06/03/2144
शुक्र	23/10/2085	सूर्य	05/08/2100	चंद्र	08/10/2117	मंगल	02/10/2133	राहु	25/03/2145
सूर्य	16/09/2086	चंद्र	05/12/2101	मंगल	17/11/2118	राहु	21/04/2136	गुरु	21/12/2145
चंद्र	17/03/2088	मंगल	11/11/2102	राहु	23/09/2121	गुरु	28/07/2138		00/00/0000
मंगल	05/04/2089	राहु	06/04/2105	गुरु	05/04/2124	शनि	06/04/2141		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 2 वर्ष 3 मा 12 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
20/12/2025		27/02/2026		08/04/2027		04/04/2028		05/08/2031	
27/02/2026		08/04/2027		04/04/2028		05/08/2031		04/08/2032	
	00/00/0000	शनि	03/05/2026	बुध	30/05/2027	शुक्र	24/10/2028	सूर्य	23/08/2031
	00/00/0000	बुध	29/06/2026	केतु	20/06/2027	सूर्य	24/12/2028	चंद्र	23/09/2031
	00/00/0000	केतु	23/07/2026	शुक्र	19/08/2027	चंद्र	05/04/2029	मंगल	14/10/2031
	00/00/0000	शुक्र	28/09/2026	सूर्य	06/09/2027	मंगल	15/06/2029	राहु	08/12/2031
	00/00/0000	सूर्य	18/10/2026	चंद्र	06/10/2027	राहु	14/12/2029	गुरु	25/01/2032
	00/00/0000	चंद्र	21/11/2026	मंगल	28/10/2027	गुरु	26/05/2030	शनि	23/03/2032
	20/12/2025	मंगल	15/12/2026	राहु	21/12/2027	शनि	04/12/2030	बुध	14/05/2032
मंगल	07/01/2026	राहु	13/02/2027	गुरु	07/02/2028	बुध	26/05/2031	केतु	04/06/2032
राहु	27/02/2026	गुरु	08/04/2027	शनि	04/04/2028	केतु	05/08/2031	शुक्र	04/08/2032

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
04/08/2032		05/04/2034		05/06/2035		05/06/2038		03/02/2041	
05/04/2034		05/06/2035		05/06/2038		03/02/2041		04/04/2044	
चंद्र	24/09/2032	मंगल	30/04/2034	राहु	16/11/2035	गुरु	13/10/2038	शनि	05/08/2041
मंगल	29/10/2032	राहु	03/07/2034	गुरु	11/04/2036	शनि	16/03/2039	बुध	16/01/2042
राहु	29/01/2033	गुरु	29/08/2034	शनि	01/10/2036	बुध	01/08/2039	केतु	24/03/2042
गुरु	20/04/2033	शनि	04/11/2034	बुध	05/03/2037	केतु	27/09/2039	शुक्र	03/10/2042
शनि	25/07/2033	बुध	03/01/2035	केतु	08/05/2037	शुक्र	07/03/2040	सूर्य	30/11/2042
बुध	20/10/2033	केतु	28/01/2035	शुक्र	07/11/2037	सूर्य	25/04/2040	चंद्र	06/03/2043
केतु	24/11/2033	शुक्र	09/04/2035	सूर्य	01/01/2038	चंद्र	15/07/2040	मंगल	13/05/2043
शुक्र	06/03/2034	सूर्य	01/05/2035	चंद्र	02/04/2038	मंगल	10/09/2040	राहु	02/11/2043
सूर्य	05/04/2034	चंद्र	05/06/2035	मंगल	05/06/2038	राहु	03/02/2041	गुरु	04/04/2044

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
04/04/2044		03/02/2047		04/04/2048		23/07/2048		22/01/2049	
03/02/2047		04/04/2048		23/07/2048		22/01/2049		30/05/2049	
बुध	29/08/2044	केतु	28/02/2047	सूर्य	10/04/2048	चंद्र	07/08/2048	मंगल	29/01/2049
केतु	28/10/2044	शुक्र	10/05/2047	चंद्र	19/04/2048	मंगल	18/08/2048	राहु	17/02/2049
शुक्र	19/04/2045	सूर्य	01/06/2047	मंगल	25/04/2048	राहु	14/09/2048	गुरु	06/03/2049
सूर्य	10/06/2045	चंद्र	06/07/2047	राहु	12/05/2048	गुरु	09/10/2048	शनि	27/03/2049
चंद्र	04/09/2045	मंगल	31/07/2047	गुरु	27/05/2048	शनि	07/11/2048	बुध	14/04/2049
मंगल	03/11/2045	राहु	03/10/2047	शनि	13/06/2048	बुध	02/12/2048	केतु	21/04/2049
राहु	08/04/2046	गुरु	29/11/2047	बुध	28/06/2048	केतु	13/12/2048	शुक्र	12/05/2049
गुरु	23/08/2046	शनि	04/02/2048	केतु	05/07/2048	शुक्र	13/01/2049	सूर्य	19/05/2049
शनि	03/02/2047	बुध	04/04/2048	शुक्र	23/07/2048	सूर्य	22/01/2049	चंद्र	30/05/2049

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	5
मित्र अंक	2, 7, 8, 5
शत्रु अंक	4, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	86%	दम्पति, धन, सन्तति सुख
नीलम	शनि	81%	धनार्जन, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	69%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
हीरा	शुक्र	47%	दुर्घटना, रोग, शत्रु व रोग
माणिक्य	सूर्य	44%	दुर्घटना, ग्रह कलेश
लहसुनिया	केतु	28%	ग्रह कलेश, दुर्घटना
पुखराज	गुरु	22%	धन हानि, दुर्घटना, हानि
मोती	चंद्र	0%	दुर्घटना, पराक्रम हानि
मूंगा	मंगल	0%	दुर्घटना, व्यय, दाम्पत्य कष्ट

रत्न की शुभता

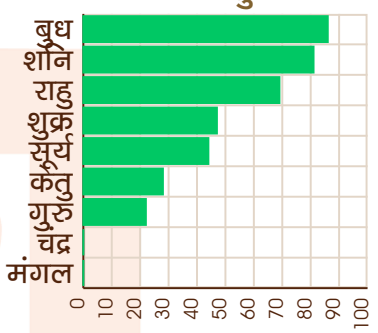

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	04/04/2028	19%	0%	0%	86%	22%	55%	69%	56%	52%
शुक्र	04/04/2048	19%	0%	0%	92%	22%	61%	88%	75%	41%
सूर्य	05/04/2054	59%	9%	0%	86%	34%	22%	69%	56%	3%
चंद्र	04/04/2064	53%	22%	0%	92%	22%	47%	81%	56%	3%
मंगल	05/04/2071	53%	9%	0%	73%	34%	47%	81%	56%	41%
राहु	05/04/2089	19%	0%	0%	86%	22%	55%	88%	81%	3%
गुरु	06/04/2105	53%	9%	0%	73%	47%	22%	81%	69%	28%
शनि	05/04/2124	19%	0%	0%	92%	22%	55%	94%	75%	3%
बुध	06/04/2141	53%	0%	0%	98%	22%	55%	81%	69%	28%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/12/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------

द्वितीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढेसाती प्रथम ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढेसाती द्वितीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------

तृतीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/07/2093-18/08/2095	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	03/12/2102-29/11/2105	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	25/02/2108-29/07/2108	23/11/2108-17/02/2111	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	भाग्योदय

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी कुंडली में जन्म के समय मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जनित एवं रक्त विकार से आप यदा कदा कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं उनके स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा तथा इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव भी नहीं होगा। साथ ही समय समय पर आपके सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। इसके प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व किसी वार्ता में बाधा भी आ सकती है परन्तु अन्त में आपको सफलता प्राप्त होगी तथा सामान्यतया सुख पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा।

आपकी कुंडली में मंगल अष्टम भाव में है अतः आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा गर्मी आदि से आपको किंचित परेशानी की अनुभूति हो सकती है। सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आय स्रोतों में वृद्धि होगी। आवश्यक मात्रा में लाभार्जन भी होता रहेगा परन्तु इस में आपको अधिक परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे। साथ ही वाणी में ओजस्विता का भाव भी रहेगा परन्तु धनार्जन अच्छा रहेगा तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा। पराक्रम में वृद्धि होगी जिससे आप अपने उन्नति मार्ग को प्रशस्त करने में समर्थ रहेंगे ।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको ऐसी

मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु की स्थिति होनी चाहिए। इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा ऐश्वर्य आदि से आप सुसम्पन्न होकर आनन्दपूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे। साथ ही परस्पर संबंधो में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- लग्नेश अष्टम् भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

आठवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ

सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

मंगल

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं यथाशक्ति जीवन में आपको अपना सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे। साथ ही यदा कदा आप उनसे विशेष रूप से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपका साथ देंगे तथा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे।

आप भी उनको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह तनाव अस्थाई रहेगा एवं शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जीवन में आप सभी विषम परिस्थितियों में सर्वदा उनकी अपनी ओर से वांछित सहायता प्रदान करते रहेंगे।

बुध

सातवेंभाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुर्ख, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्तितिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्त्ता एवं आलसी होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- केतु
(20/12/2025 - 04/04/2028)

केतु की महादशा 20/12/2025 को आरम्भ और 04/04/2028 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में केतु चतुर्थ भाव में स्थित है। केतु की दृष्टि दशम भाव पर है। इसके पहले आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपकी यात्रा, व्यय, अवांछित परिवर्तन, और सगे संबंधियों की सहायता मिली होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको ख्याति, प्रगति तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आप आशावादी होंगे और स्वयं को स्फूर्तिवान तथा सक्रिय महसूस करेंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको पित्तदोष, फोड़ा-फुन्सी, विषाणुजन्य संक्रामक रोग, छाती से संबंधित बीमारी, मूत्राशय की समस्या, वृक्कशोथ की बीमारी आदि हो सकती है। कुछ सतर्कता से इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। आपको माता पिता से लाभ हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार में अच्छी आय होगी, विभिन्न स्रोतों से लाभ होगा और आप अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल होंगे। जीविका के लिये विधि, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, सम्पर्क-कार्य, प्रबन्धन, ग्राफिक कला, ललित कला, विमान-विज्ञान, शिक्षण, परिष्कृत कला आदि का चयन कर सकते हैं। वस्त्र, चमड़े, रबड़, प्लास्टिक, मवेशी, अनाज, फल, सोने, चाँदी, कलाकृतियों आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को लाभ, आय में वृद्धि, सम्मान और लक्ष्य की प्राप्ति होगी तथा मनोकामना पूरी होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को साझेदारों से लाभ, कार्य-व्यवसाय से सम्बन्धित यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी। यह दशा आर्थिक और व्यावसायिक उन्नति के लिए उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का सुख मिलेगा। आप नयी गाड़ी खरीद सकते हैं। सम्पत्ति के मामले तूल पकड़ेंगे और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी-बड़ी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी बुनियादी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा के लिए आप विद्यालय बदल सकते हैं। आप परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं में अच्छा करेंगे। दवा, कम्प्यूटर विज्ञान, परिष्कृत कला, विधि, व्यापार प्रबंधन, बैंकिंग, होटल प्रबंधन आदि में आपकी रुचि होगी। आप संतुलित और समझदार हैं और अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को आपकी सहायता और मार्ग दर्शन की आवश्यकता होगी। आपके जीवन साथी को यश और ख्याति प्राप्त होगी और जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। आपके पड़ोसी से आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को यश और ख्याति की प्राप्ति और उन्नति होगी। आपका उनके साथ कुछ मतान्तर हो सकता है। आपके पिता के जीवन में परिवर्तन और कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होंगी। आपके छोटे भाई-बहनों को लाभ मिलेगा और उन्नति होगी जबकि बड़ों को विरोधियों पर विजय, ननिहाल से सहायता और प्रतिस्पर्धा में सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको गृह-सुख, उत्तम शिक्षा, यश और ख्याति मिलेगी। शुक्र के फलस्वरूप आपको आराम और सुख की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्रा होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सगे संबंधियों से सहायता मिलेगी जबकि चन्द्र की दशा में लाभ और पारिवारिक आनन्द मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान स्वास्थ्य के खराब होने, विरोध और सम्पत्ति-लाभ की सम्भावना है। राहु के कारण कुछ समस्याएं हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपका विवाह होगा, जीविका में प्रगति और साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा में कुछ परिवर्तन, पिता से लाभ, यात्रा और अध्यात्म में रुचि होगी। बुध की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य और समृद्धि की प्राप्ति होगी।

अंर्तदशा :- केतु - गुरु
(20/12/2025 - 27/02/2026)

आपके लिए केतु महादशा 20/12/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 20/12/2025 को प्रारंभ होकर 27/02/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनेगी। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। उत्तम वस्त्र और भोजन का सुख मिलेगा। स्वास्थ्य उत्तम होगा। आप धनी बनेंगे, सरकार से लाभ होगा, सुख-साधन उपलब्ध होंगे। कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी। अधीनस्थ कर्मचारियों और किरायेदारों से लाभ होगा। स्वास्थ्य उत्तम होगा। अच्छी नौकरी मिल सकती है, प्रसिद्ध हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। आपके पिता को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी, मातहतों से लाभ हो सकता है। माता भाग्यशाली रहेंगी, धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, प्रगति में बाधा, प्रसन्न जीवन का संकेत है।

आपकी संतान सफलता प्राप्त करेगी; उनके प्रभावशाली मित्र होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा; सफल और धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, आय अच्छी होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। खानपान में संयम बरतना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- केतु - शनि
(27/02/2026 - 08/04/2027)

आपके लिए केतु महादशा 20/12/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 27/02/2026 को प्रारंभ होकर 08/04/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि भाग्य और सेवा का कारक है।

इस अवधि में आपको व्यापार में लाभ होगा, अचानक धनागम हो सकता है, अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आप धनी बनेंगे, खुद की जमीन हो सकती है, वाहन सुख रहेगा। आपके प्रभावशाली मित्र होंगे जो लाभकारी सिद्ध होंगे। आय अच्छी होगी। सब काम बन जाएंगे, आत्मविश्वास बढ़ेगा, प्रोन्नति और प्रसिद्धि का संकेत है। जीवन संयमित रहेगा। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे; उन्हें निवेश से लाभ होगा। आपके पिता

महादशा :- शुक्र
(04/04/2028 - 04/04/2048)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 04/04/2028 को आरंभ होकर 04/04/2048 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र, जो स्वभावतः एक शुभ ग्रह है और संगीत, नाटक, अच्छे स्वाद, भावनात्मक आनन्द और मनोरंजन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। यह दो राशियों वृष तथा तुला का स्वामी है एवं मीन राशि में उच्च का जबकि कन्या राशि में निम्न का होता है। आपकी

कुण्डली में यह अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव में स्थित यह आपकी जन्म कुण्डली के द्वितीय भाव को देख रहा है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव, जिसमें यह स्थित है अर्थात अष्टम भाव दीर्घायु, पैतृक गुण, पैतृक सम्पत्ति, दुर्घटनाएँ, धोखे से मृत्यु, भाग्यहीनता, उदासी और अपयश का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

अष्टम भाव में स्थित शुक्र भाव को प्रबलित कर रहा है जो दीर्घ आयु का द्योतक है। इसलिए आपकी उम्र काफी लम्बी होगी तथा आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र अष्टम भाव में स्थित है जो आपके वित्तीय जीवन में काफी उतार-चढ़ाव देगा। आपकी जन्म कुण्डली में यह अष्टम भाव से द्वितीय भाव, जो धन का भाव है, को देख रहा है। अतः इस दशा काल में धन की कमी नहीं होगी और आप चल तथा अचल सम्पत्ति में वृद्धि कर पाने की स्थिति में होंगे। आपको कुछ विरासती सम्पत्ति भी मिल सकती है।

व्यवसाय :

व्यावसायिक रूप से सुभ्यस्त आप जमीन, वाहन, अधिकार, तथा पद प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में ख्याति करेंगे। आप कोई भी व्यवसाय करें, सफल होंगे। आप शिक्षित होंगे और आपका झुकाव धर्म की ओर होगा।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्र पूर्ण तथा नियमित होगा। जीवन में कुछ उदासी तथा बाधाएं आएंगी जिन्हें आप पार कर लेंगे। आपके पिता कुछ कठिनाइयों से गुजर सकते है अपने कार्य में असफल हो सकते हैं।

अंर्तदशा :- शुक्र - शुक्र
(04/04/2028 - 05/08/2031)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/04/2028 को प्रारंभ होकर 04/04/2048 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 04/04/2028 को प्रारंभ होकर 05/08/2031 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। शुक्र शुभ ग्रह है। अष्टम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। वाहन आदि सभी सुख उपलब्ध रहेंगे। अत्यधिक संवेदनशील हो सकते हैं, अतः भावनाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 64000 जाप करें और निम्न उपाय करें :

- चींटिओं को चीनी और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।
- लक्ष्मीजी की उपासना करें।